मुल्य रु। ५-००

सलंग अंक ७४ जून-२०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क (अहमदाबाद) का रजत जयंती महोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ठाकोरजी के चंदन के वाधामे दर्शन (२) विहार गाँव में प.भ. सांकलचंदभाई पटेल परिवार द्वारा आयोजीत कथा पारायण प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन करते हुए यजमान परिवार (३) श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का चंदन के बाधा में दर्शन (४) भाभर (बनासकांठा) गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का भूमिपूजन करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन करते हुए यजमान परिवार (५) दियोदर (बनासकांठा) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का भूमि पूजन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन करते हुए यजमान परिवार (६) जुलासण श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के युवको के साथे प.पू. महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ७ ● अंक : ७४

जून-२०१३

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०६
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०३.	शंखनाद	०६
०४.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	०८
०५.	सत्संग बालवाटिका	१०
०६.	भक्ति सुधा	१२
०८.	सत्संग समाचार	१७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने आश्रितों के सुख के लिये शिक्षापत्री प्रदान किया है। प्रभु की आज्ञा का पालन जो करेगा वह कभी दु:खी नही होगा। हम जब अपने अनुकूलता अनुसार कोई कार्य करने जाते हैं तो सामने से दु:ख आता है। एसा कहा गया है कि ''धार्युं धागीनुं थाय'' इसलिये हमें अपनी बुद्धिमानी नहीं दिखानी चाहिए जिससे दु:खी होना पड़े। भगवान की भजन में यदि कोई अन्तराय आता है तो वही माया है। माया का आवरण हट जाय तो भगवान की भजन का सुख मिलेगा। लेकिन माया हमारा साथ नहीं छोड़ती जिससे भजन भक्ति में विघ्न आता है। महाराज कहते हैं कि जब रजोगुण तमोगुण का प्राबल्य होता है तब भगवान की भजन में अन्तराय आता है। जब सत्वगुण का प्राबाल्य रहता है तब भगवान में अखंड चित्तवृत्ति लगती है और अखंड भजन होती है। इसलिये हम सभी को चाहिए कि सर्वोपरि श्रीहरि का सतत चिंतन-स्मरण करते रहना चाहिए। चाहे कितना भी खराब प्रारब्धहोगा तो भी श्रीहरि के अखंड स्मरण से नष्टहोजाएगा।

वर्तमान में गरमी का प्रकोप चल रहा है। अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वरुपों को शीतलता प्रदान करने वाले मलयागिरि चंदन से चर्चित करके शीतलता प्रदान करने वाले स्वरुप का दर्शनके शुख प्राप्त करते हैं। भगवान श्रीहरि को प्रार्थना करें कि हमारा मन सदा आपकी मूर्ति में अखंड बना रहे, सदा शीतल बना रहे, आपके उपकार की भावना बनी रहे।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१३)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर देवपुरा (ता. विरमगाम) शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर रामपरा (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

४ प.भ. घनश्यामभाई पटेल (विहारवाला) के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण नरोडा निकोल रोड।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली कथा प्रसंग पर पदार्पण।

७-८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर डुमाणा (ता. विरमगाँव) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१२ विहार गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण, सायंकाल बलदिया (कच्छ) पदार्पण।

१३ बलदिया (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर शोभायात्रा तथा वहाँ से सामत्रा (कच्छ) पदार्पण । सायंकाल भुज (कच्छ) पदार्पण।

१४-१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) कथा प्रसंग पर तथा पाटोत्सव महाभिषेक अपने वरद हाथों से संपन्न किये।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप कथा तथा पाटोत्स प्रसंग पर पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुकडिया (इडरदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (इडर देश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क २ वें पाटोत्सव तथा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२४ प.भ. पटेल दिकेनभाई कांतिलाल के यहाँ पदार्पण, बावला से रात्रि में कच्छ पदार्पण।

२५ सुखपर (कच्छ) पदार्पण।

२६-२७ भुज (कच्छ) पदार्पण, सायंकाल दहींसरा (कच्छ) पदार्पण।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर सायरा (साबरकांठा) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
दोपहर में श्री स्वामिनारायण मंदिर (भराडा) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१३)

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर दियोदर (बनासकांठा) नूतन मंदिर के भूमि पूजन प्रसंग पर पदार्पण।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर दांतीयां (वाली-राजस्थान) पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क रजत जयंती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

शंखवनाद

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

अपनी वैदिक तथा पौराणिक पूजाविधिमें शंखपूजन का बड़ा महत्व है । वह अष्ट राजोपचार में परिगणित माना जाता है । पूजा में आध्यात्मिक तथा आरोग्य का उत्तम समन्वय लाभ प्रद है। बड़े यज्ञ कर्म से लेकर गृह पूजा-नित्य पूजा के उपयोग में लिया जाता है। पांचजन्य शंख की उत्पत्ति समुद्र में से हुई है । भगवान विष्णु चतुर्भुज आयुधो में से बांये हाथ में संख धारण करके भक्तो को अभय प्रदान करते हैं । भगवान जब संखनाद करते है तब आसुरी तत्व को भयभीत करके विनाश करते हैं । जिस तरह महा भारत के युद्ध में भगवान श्रीकृष्णने शंखनाद करके शत्रुओं के गात्र को कंपित कर दिया था, बाद में अर्जुनका मार्ग सरल हो गया । इसलिये आज भी परंपरागत ढंग से मंदिरों में आरती के समय अथवा आरती के पूर्व शंखध्वनि की जाती है जिससे आसुरी तत्वो सें तथा रोमवाले कीटाणुओं से वातावरण रहित हो जाय । ऐसे सभी तत्व शंखनाद से मूर्छित हो जाते है । इससे वायु मंडल में शुद्धता का वातावरण बनता है । शंखध्वनि का श्रवण करना वाणी के लिये महौषधिहै । इसके अलांवा संखनाद करने वाले के हृदय को बल मिलता है । श्वास का रोग दूर होता है । मंदिरो में जन बाहुल्य होने से श्वासोच्छास के रोग को शंखनाद दूर करता है । शंख को पूजा में विशेष अंग माना जाता है।

सन १९२८ में वर्लिड् युनिवर्सिटि में शंखध्वनि का संशोधन करके प्रमाणित किया गया कि शंखनाद में वेक्टेरिया दूर करने की महाशक्ति है । यह प्रति सेकेन्ड २७ घनफूट वायु शक्ति द्वारा प्रदिषित वायु को १२०० फूट तक के क्षेत्र में स्थित कीटाणुओं को मूर्छित करने कि शक्ति है । इसके अलावां शिकागो यु.एस.ए. के डॉ. डी. ब्राईने १३ कान के बधिर रोगियों को शंखध्वनि द्वारा स्वस्थ करने का प्रयोग किये हैं।

भगवान हरि वनविचरण के समय गोपाल योगी के आश्रम में पशुओं की रक्षा के लिये हिंसक पशुओं का उपाय पूछा था । उस समय श्रीहरि ने शंखनाद का बड़ा सरल उपाय बताया था । उसके बाद वहाँ के गोपाल कोंने शंखनाद के माध्यम से गोवंश की रक्षा की थी ।

शंख के अनेक प्रकार है - उस में दक्षिणावर्ति शंख सबसे श्रेष्ठ है । दूसरे क्रम में वामावर्ति शंख है । तीसरे प्रका रकी लक्ष्मी शंख बताई गयी है । इसके अलाँवा तमिल शंख श्री लंकन संख का भी समावेश होता है ।

परंतु सभी प्रकार के शंख में आध्यात्मिक तथा आरोग्य का समन्वय तो है ही। हमरे ऋषियों ने शंख पर खूब गहन चिन्तन किया है।

बड़ी दक्षिणा वर्ति शंख में रात्रि के समय पानी भरकर रखना चाहिये। प्रातः उस जल से स्नान करने से चर्मरोग दूर होता है।पेट के रोग में १२ घंटे तक शंख में पानी रखकर सेवन करने से रोग दूर होता है। शंख में नर-मादा की जोडी भी होती है। नर-मादा की जोडी रखकर पूजा की जासकती है। जोड़ी को एक शंख माना जाता है। मात्र दक्षिण वर्ती शंख की ही पूजा होती है। उस शंख में आवाहन मंत्रादि का कार्य करने के बाद सिद्ध करके पूजा करनी चाहिये। दक्षिणावर्ती शंख को व्यापार स्थल पर या आफिस में भी रखा जा सकता है।

शंख की पूजा करने से जीवन में शान्ति मिलती है। गर्भवती स्त्री को शंख से शालिग्राम के अभिषिक्त जल का पान कराने से बालक कभी भी बहरा मूंगा नही होगा। इसके अलावां अन्य रोगो से मुक्त रहेगा। रोग प्रतिकारक शक्ति बढाती है।

घर के मंदिर में संख रणा जा सकता है। पूर्णिमा के दिन स्थापना करनी चाहिये। उसमें जल भरकर रखना चाहिये। पानी के विना शंख नहीं रखना चाहिये। शंख में अग्नि तत्व प्रधान है। इसलिये चंदन से पूजा करनी चाहिये। चंदन का स्वस्तिक करें। अक्षत चढावें पानीसे परिपूर्ण करें।

आरती के बाद शंख जल का सर्वत्र छिंड़काव करें। शंख को स्टेन्ड पर रखें नीचे नहीं रखना चाहिये। शंख का मुख अपनी तरफ रखना चाहिये। ध्वनि के लिये बड़ी शंख रखनी चाहिये। पूजा में विषम (१.३.५) संख्या में शंख होना चाहिये। घर में शंख की पूजा होती रहे तो सुख-शांति, धन-धान्य की वृद्धि होती है। लक्ष्मीकी उत्पत्ति समुद्र में से हुई है इसी तरह शंख की उत्पति भी समुद्र से हुई है। इसलिये जो संख की पूजा करेंगे उन्हें लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। शंख की ऊर्जा पूरे घर या मंदिर को प्रभावित करती है।

शंख को भगवान के बाई तरफ रखना चाहिये। इसलिये कि भगवान चतुर्भुज रुप में शंख को बांये हाथ में धारण करते हैं। निर्णय सिंधु, धर्मसिंधु, अग्निपुराण में शंख पूजन का खूब महत्व बताया गया है।

आरोग्य के लिये शंख मुद्रा करने से बहुत फायदा होता है। कितने भी असाध्यरोग हों दिन में तीन बार या उससे अधिक बार शंख मुद्रा की जाय तो आराम मिलता है।

उत्तम शंख की परीक्षा जानकार से करानी चाहिये। इसलिये डपोर शंख श्री बजार में बिगती है। इन्टरनेट के माध्यम से गुगल में सर्च करने पर काफी जानकारी मिलती है। सामुद्रिक शास्त्र के मतानुसार जिसके हाथ में शंख की निशान हो वह राजा होता है। अथवा महापुरुष का लक्षण मिलता है।

आगामी उत्सव

ज्येष्ठ मास द्वादशी गुरुवार ता. ४-७-१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर पाटोत्सव।

आषाढ शुक्ल-४ शुक्रवार ता. १२-७-१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या पाटोत्सव।

आषाढ शुक्ल पूर्णिमा सोमवार ता. २२-७-१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का गुरुपूजन।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

सं. १९१६ ना परखे असाढ वदी ११ वार सने ता. १४ माहे जुलाई सन १८६० ईस्वी दीने श्री स्वामिनारायण गादीना आचारज श्री अयोधापरसादजी हरिकृष्णजी महाराज पारसात जोग लखीतंग अमीन गोकलभाई हरिभाई तथा भाई गोवनभाई हरिभाई रहेवासी मोजे असलाली प्रगणे दसकरोईना गामना जत अमारा बाप हरिभाई वरजभाईने जमीन सहेर अमदावादमां चकले चोडना दरवाजे नवा वासना पासेनी पडतर जमीन माजी कालेक्टर वइवेट साहेबे संवत १८८६ नी साल मां आपी हती ते जमीन अमारा बापे तमने बकसीस आपी तेनुं खत सरकारी खत तमने सोंपेलु छे। ते सादा कागल उपर लखी आपेलु ते जमीनना खुंटनी विगत दक्षिण तरफ तमारा घरनो करो छे तथा पश्चिम दीसा त्रफ राजमारग छे तथा पूरव दिसाए श्री नरनारायणदेवनुं मंदिर छे तथा उत्तर दीसाए तमारी हवेलीननो करो छे। ए रीते चार खूंट वाली जमीन अमारा बापे तमोने बक्सीस आपेली तेनु खत तमारी पासे घेरवले पड़े छे तेथी आज रोज ऊपर लकेली खूंटवाली जमीन नो आ सरकारी कागल उपर दस्तावेज लखी आपीए छीए ने ए जमीन ऊपर तमारी नजरमां आवे ते रीते इमारत करी तमारा वंश परंपरा वावरो तेमा अमोने कंई दरदावो नथी। माटे आ दस्तावेज लखी आपो छे ते सही छे

१. अंतर मत
१. अमीन गोकुलभाई खदुदा. पाताना
१. पा. गोविंदभाई हरिभाई दा. पोताना

१. अतर साख
१. पा. हीरा...
१. पा.
१. ला.... पर हरगोवन
वहेवारदासदणीने हजूर लब दे

प्रसादी के इस पत्र को श्री स्वामिनारायण म्युजियम में हरिभक्तों के दर्शनार्थ होल नं. ९ में रखा गया है। सभी हरिभक्त दर्शन का लाभ अवश्य लें।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेंट देनेवालों की नामावलि मई-२०१३

रु. १,६२,०००/-	अ.नि. अमृतभाई नरसिंहभाई पटेल	रु. ११,००१/-	अ.नि. ईश्वरदास जोइताराम हरिदास पटेल
रु. ५०,०००/-	जीवणभाई त्रिभोवनदास इटादरा	रु. ११,०००/-	धीरजभाई करशनभाई पटेल - अमदावाद
रु. ३३,३००/-	पार्षद कनु भगत गुरु पार्षद वनराज भगत	रु. ५,०००/-	डॉ. हरिकृष्णभाई गोगणभाई पटेल - सापावाडा
रु. ३१,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर, देवपुरा	रु. ५,०००/-	घनश्याम इज्जियरिंग - बोपल
रु. ११,१११/-	न्यु पटेल सायकल रीपेरींग वर्क्स - दहेगाँव		

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मई-२०१३)

ता. ५-५-१३ प.भ. अमरसिंहभाई लवजीभाई पटेल - नारणपुरा

ता. १२-५-१३ प.भ. करशनभाई राधवाणी - मेमनगर

ता. २८-५-१३ प.भ. प्रियांककुमार देवशीभाई पटेल - छादली

ता. २८-५-१३ प.भ. छेलाभाई नरसिंहभाई परिवार - गवाडा

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा ।

नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए ।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com **email:swaminarayanmuseum@gmail.com**

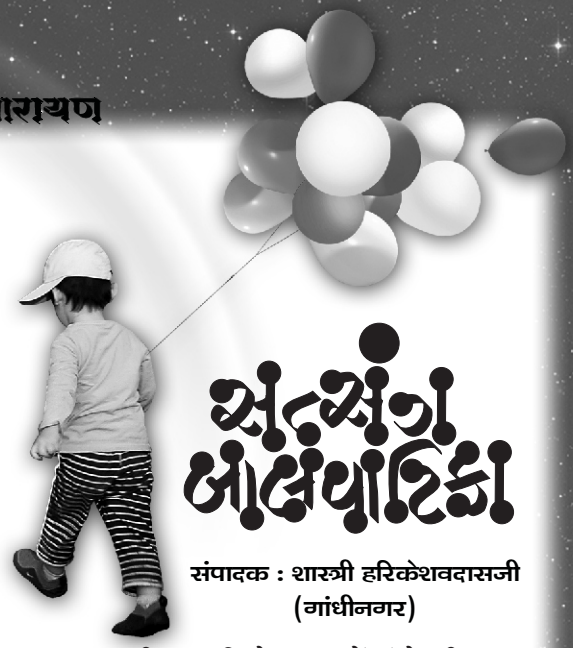

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

मोक्षदाता महाराज

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

हुं तो अडधी रात्रे दोडुं रे भक्तो ने काजे ।
सुख मारा सर्वे छोडुं रे भक्तो ने काजे ॥

भगवान अपने भक्तों के लिये कुछ भी करने के लिये तत्पर रहते है । चाहे कितना भी कष्ट आवे सहन करने के लिये तैयार रहते हैं । अपनी टेक भक्तों के लिये तोड़ देते हैं । जब कि महा भारत में श्री कृष्ण भगवानने टेकलिया था कि महाभारत में हथियार धारण नहीं करुँगा । प्रभु की टेक तोडवाने के लिये भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण प्रभु के ऊपर असंख्य बाणों की वर्षा की । फिर भी प्रभुने हथियार धारण नही किया । परंतु जब अपने भक्त के ऊपर (अर्जु के ऊपर) भीष्म द्वारा प्रहार प्रभु ने देखा तो तुरंत रथ की पहिया को चक्र की तरह हाथ में धारण करके अर्जुन की रक्षा किये थे । इसी तरह भगवान अपने संतो की रक्षा के लिये तथा भक्तों की रक्षा के लिये अपने ऐश्वर्य को भूलकर भक्तों के सुख के लिये प्रयास करते हैं ।

बात ऐसी है कि भगवान श्री स्वामिनारायण अपने संतो भक्तों के साथ सौराष्ट्र से निकल कर गुजरात के दंढाव्य देश में विचरण करने के लिये, भक्तों को सुख प्रदान करने के लिये प्रस्थान किये । वि.स. १८ सौ छिहतर की साल में प्रभु सौराष्ट्र से गुजरात आने के लिये प्रत्येक गाँवो के भक्तो को सुखप्रदान करते हुए उत्तर गुजरात के कलोल गाँव में पधारे । वहाँ से शेरथा होकर डांगरवा पधारे वहाँ से करजीसन, वडुगाँव होते हुए ओला के भक्तों को खड़े खड़े दर्शन देकर आदरज पधारे । वहाँ पर अन्नकूट का महोत्सव करके उनावा पधारे । वहाँ से नारदीपुर माणसा होते हुए विहार गाँव पधारे । उसके बाद डुंगरजी भक्त के गाँव होते हुए बामणवा गाँव पधारे ।

आज जो वात करनी है वह बामणवा गाँव की बात करनी है । गाँव के भक्त भगवान को अपने घर पदार्पण करवाकर उनकी पूजा किये । बाद में संतो की पूजा किये । सभी प्रभु के साथ गाँव के बाहर आकर विश्राम किये ।

सायंकाल का समय था । गाँव के सभी हरिभक्त अनपे घर से दूधले आये, जिसे श्रीहरिने संतो को पिलाया । उसी समय महाराज के मन में हुआ कि बगल में एक मुमुक्षु जीव बहन रहती है, उनका कल्याण करना है । इसीलिये उनके यहाँ पहुँच गये । बहन से कहे कि बहन ? हमें आपके इस गाँव में बारंवार नहीं आना है, आज आये हैं और कल चले जायेगे । आपके बगल में हम रुके हैं, हमारे साथ संत भी है । आप के यहाँ ही समझिये कि हम रुके है । हम आपके मेहमान है । जिस तरह आपके बालक है वैसे वे भी हमारे बालक है । इतना कहकर संतो की तरफ हाथ करके कहे कि आपके घर में जो दूधहै वह हमें दे दीजिये । हम उन्हें परसना चाहते है ।

''भीख मांगने आया तेरे घर,
जगत का पालन हारा हे.....''

जगत के पालन हारा आज अपने संतो के लिये एक बहन के पास जैसे भीख मांगते हों ऐसा कहने लगे । वह भी बहन भी कैसी दैवी जीव जो प्रभु के कहते ही

पूरा दूधदे दिया । प्रभु के पूरा दूधलेजाकर गारकर संतो को परसने जा रहे थे उसी समय वह बहन कहने लगी कि पहले आप दूध पीओ बाद में परसो । प्रभु ने ऐसा ही किया । स्वयं पहले पीये बाद में संतो को दूधभात परसे । सभी भोजन कर लिये, बादमें भजन कीर्तन का आनदं प्रारंभ हुआ ।

धन्य है उस धर्म कुमार को, जिन्होंने पूरा दूध बहन से लेकर संतो को पिलाया, धन्य वह बहन है, जिन्होंने प्रभु को पहचान कर पूरा दूधप्रभु को अर्पण कर दिया । तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा । जिन्हे देना चाहिये लोग उन्हें नही देते अन्यत्र देने से उन्हें कुछ मिलता नहीं प्रभु को देकर इस बहनने अपना मोक्ष सुधार लिया ।

●

एकादशी व्रत की महिमा

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

सुमेधा नामक एक ब्राह्मण थे, जिनकी पवित्रा नामकी पत्नी थी । प्रारब्धके योग से ब्राह्मण निर्धन थे । पेट भर भोजन तथा पहनने के लिये पूरा वस्त्र भी नहीं था । उनकी पत्नी स्वयं भूखे रहकर पति को भोजन कराती थी । घर में आये हुए अतिथि, साधु, संत को यथा शक्ति भोजन कराती थी । घर में अनाज नहीं है ऐसा कभी नहीं कहती थी । दुःख तथा भूख के कारण अन्यत्र दुर्बल देखकर पति देव को काफी पीड़ा हुई । एक दिन वे पत्नी से कहने लगे, धनवानो के पास धन बहुत है, मांगने पर वे देते नहीं है । धन के बिना घर कैसे चले । तुम कहो तो मैं धन कमाने के लिये परदेश जाऊँ । कार्य की सिद्धि बिना उद्यम के बिना होती नही है ।

पति की वचन सुनकर पत्नी कहने लगी कि पूर्वजन्म जो दान किये होते तो इस जन्म में फल मिलता । जो पूर्वजन्म में अन्न, धन, जल इत्यादि दान में नहीं दिये हो उन्हें इस जन्म में सोने के पर्वत पर जाने पर भी कुछ भी नहीं मिलेगा । हमने भी पूर्जन्म में कुछ अच्छा नहीं किया है इसलिये मिलता नहीं है । प्रयत्न करने पर थोडा बहुत प्रभु अन्न दे देते हैं । इसी में खुश रहो, अन्यत्र जाने की जरुरत नहीं है । पत्नी के वचन सुनकर पति देव कहीं नही गये, घर पर ही रहे ।

एक दिन कौडिन्य मुनि उनके घर आये । पति-पत्नी उन्हें प्रणाम किये । आसन पर बैठाकर पूजा किये । बाद में ब्राहमण पत्नी हाथ जोडकर कहने लगी कि मुनिराज । हमारे दारिद्रय को दूर करने का कोई उपाय बताइये । मुनि चिन्तन करके कहने लगे कि आप अधिक मास के कृष्णपक्ष की परमा (कमला) एकादशी का व्रत करके पूजन करो । रात्रि जागरण करके भगवान का कीर्तन करो । इस तरह करने से आप सुखी हो जाओगे । इसके साथ ही मुनिने पंचरात्रि व्रत का भी नियम बताया । परमा (कमला) एकादशी से प्रारंभ करके पांच दिन तक एक समय भोजन करके जो ब्राह्मण को भोजन कराता है और पांच दिन तक प्रतिदिन जल पूरित घट तथा तिलपात्र दान में देता है तो वह इस लोक तथा परलोक में सुखी होता है । कौडिन्य ऋषि के कहने से पति पत्नी ने यह व्रत किया और व्रत पूर्ण हुआ । ऐसा होते ही राजदरबार कीतरफ से समृद्धि से पूर्ण घरदान में मिला इसके साथ ही आजिविका के लिये एकगाँव भी राजा ने दान में दिया।

इस तरह अधिक मास की परमा (कमला) एकादशी का व्रत करने से ब्राह्मण देवता इस लोक में तो सुखी हुए बाद में वैकुंठ पधारे ।

एकादशी व्रत का बहुत बड़ा महत्व है । जो श्रद्धापूर्वक एकादशी व्रत करता है वह इसलोक में तथा परलोक में सुखी होता है । इसीलिये अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने अपने आश्रितों के लिये शिक्षापत्री में एकादशी व्रत को आदर पूर्वक करने की आज्ञा दी है । इसके अलांवा वचनामृत में भी एकादशी की उत्पत्ति की कथा अपने मुख से विस्तार पूर्वक समझाये है, उसका महत्व भी बताये हैं ।

इसलिये भगवान के भक्त को चाहिये कि मोक्ष की इच्छा हो तो एकादशी का व्रत अवश्य करें ।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "पृथ्वी की रचना क्यों और हम इस पृथ्वी पर क्यों ?"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

परमकृपालु परमात्मा की इस सृष्टि के सर्जन, स्थिति और विनाश ये तीनो के अधिष्ठाता त्रिदेव है । ब्रह्मा, विष्णु, शिव । परमात्माने इस प्रकार सृष्टि का निर्माण किया है । किंतु परमात्मा की इस सृष्टि में हम सब क्यों आये है ? और परमात्माने सृष्टि का निर्माण क्यों किया ? ये दो बात बहुत महत्वपूर्ण है । हम यहाँ कुछ कसौटियों को पास करने आये है ? प्रत्येक जीव इन कसोटियों को पास करके भगवान के शरण में जाकर अविनाशी सुख प्राप्त कर सकते है । इसीलिये पृथ्वी की रचना हुई है । इस पृथ्वी पर हम सनातन सत्य प्रत्येक स्थान पर स्पष्टरुप से देख सकते है । प्रत्येक जीव कर्म के आधार पर जन्म-मृत्यु, सुख-दुःख प्राप्त करता है । इस धरती पर आना और जाना किसी व्यक्ति के हाथ में नही है । कहाँ जन्म होगा उसका भी पता नही है । जन्म हुआ तो जीना तो पडेगा, और जैसे आने का पता नही वैसे जाने पर भी किसी की बस नहीं है । किंतु जो व्यक्ति सनातन सत्य को समझ लेता है वह अविनाश सुख को प्राप्त करता है । इच्छा शक्ति से मनुष्य जो चाहता है वह प्रत्येक कार्य कर सकता है, बस मनुष्य खुद को रोक सकता है । इसलिये इच्छाशक्ति रखकर समय पर प्रभु का भजन कर लेना चाहिये । जीव का लक्ष्य तो बस जन्म-मृत्यु से मोक्ष प्राप्त करना है, भगवान की शरण प्राप्त करनी है और मन की शांति प्राप्त करनी है । यह शांति भगवान के चरणो में प्राप्त होती है यह तो सब जानते है । भगवान नारायण ने सबको सब वांटा लेकिन शांति को अपने चरणो के नीचे रखा, पश्चात लक्ष्मीजी भगवान को पूछती है प्रभु आपके चरणों के नीचे क्या रखा है । तो भगवान नारायण बताते है "शांति मेरे चरण के नीचे है । जीव को जब शांति चाहिए तो मेरे शरण में आना होगा, शांति समृद्दि से नहीं मिलती । शांति सुंदर सत्विक विचारो से प्राप्त होती है और नीतीपूर्वक अर्जित दान-संपत्ति से मिलती है । पृथ्वी बनाने वाले ने कुछ नियम भी बनाये है जिसका हमे अक्षरशः पालन करना पडता है, धर्म की कटोसी देनी पडती है और पास होना पडता है । यहाँ चार बातो को समझना जरुरी है, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

(१) धर्म क्या है ? चार वर्ण एवं चार आश्रय के जो नियम है उसमें से जिस पर जो लगे उसका ज्ञान के मुताबिक अक्षरशः पालन करना चाहिए ।

(२) अर्थ क्या है ? इस पृथ्वी पर जन्म लेने का कारण, समझना यानि अर्थ जानना । हमारे जीवन का हेतु क्या है ?उसे समझकर लक्ष्य की प्राप्त करना ही अर्थ है ।

(३) काम क्या है ? जैसा कि हम सब जानते है परमात्मा के चरणो में स्थान प्राप्त करने के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, इर्ष्या, अहंकरा ये सब अवगुण बाधारुप है । ये अवगुण की भावना से स्वभाव पर नियंत्रण नहीं रहता । जिससे जीवनभर दुःख भोगना पडता है ।

(४) मोक्ष क्या है ? मोक्ष अर्थात् मुक्ति । मोक्ष कब मिलता है ? हमारी इच्छा शक्ति एवं वासना ही वारंवार पृथ्वी पर हमे लाती है । जब हम इच्छाओं से मुक्त हो जाते है तब पूर्ण हो जाते है । और पूर्ण तभी होते है जब आत्मनिष्ठा तथा परमात्मा को अच्छी तरह समझ लेते है । यह बात श्रीजी महाराजने ग.प्र.प्र. के २५ वें वचनामृत में कही है । ये चार तत्वो का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात तीन साधना से परमात्मा को प्राप्त कर सकते है । (१) शरीर (२) मस्तिक (३) हृदय

(१) शरीर के द्वारा अच्छे कर्म करके दूशरो का कल्याण करके सेवा करके कर्मो द्वारा कर्मयोग से परमात्मा को प्राप्त कर सकते ।

(२) मस्तिक सभी इन्द्रियो का राजा है । मस्तिष्क द्वारा कार्य प्राप्त कर तपयोग द्वारा और साधना से प्राप्त करते है, इसे ज्ञानयोग कहते है ।

(३) हृदय : जिस व्यक्ति को कर्मयोग की समझ नहो न ही ज्ञानयोग की और न तो तप और साधना न कर पाये वह यदि सच्चे दिल से छल कपट के बगैर परमात्मा की आराधना करे तो उसे परमात्मा की शरण मिलती है, इसे भक्तियोग कहते है । निष्काम भक्ति से ही परमात्मा को प्राप्त करते है । जब मांगने की भावना आती है तब उसे मोह कहते है । एक ही अपेक्षा रखनी चाहिए की परमात्मा अपने चरणो में स्थान दे, इसलिए अंत:करण शुद्ध रख निर्मल चित्त से निष्काम भक्ति आप सभी करे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

●

अति दयालु रे, स्वभाव है स्वामी का

- सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा

अति दयालु रे, स्वभाव छे स्वामीनो,
पर दु:ख हारी हे, वारी बहुनामी नो,
कोई ने दु:खीयो रे, देखी न खमाय,
दया आवी रे, अति अकळा थाय,
अन्न धन वस्त्र रे, आपी ने दु:ख टाळे,
करुणा दृष्टि रे, देवो वान ज वाणे,

प्रेमानंद की इस पंक्ति में भहवान के असाधारण गुण का वर्णन है । दया परमात्मा का असाधारण गुण है । दया शब्द का उपयोग मात्र परमात्मा के लिए होता है । मनुष्य के लिए उपयोग किया शब्द करुणा है । इस लिये परमात्मा दयालु है और मनुष्य करुणालु है ।

दया और करुणा शब्द तो एक जैसे है किंतु फर्क बहुत है । करुणा का अर्थ पंखीडा देख तकलीफ होना और दु:ख को देख उसका निराकरण करना ही दया है । करुणा में केवल भावनाही है । दया से तो दु:ही दूर हो जाता है । दया में करुणा का समावेश होता है । दया शिखर है और करुणा वहाँ तक का रास्ता ।

मानवता का प्रारंभ ही करुणा से होता है । दूसरो को तकलीफ में देखकर दिल पीघल जाता है इसी संवेदना को मानवता कहते है । ये संवेदना किसी भी जानवर के पास नहीं हो तो । पर दु:ख को समझना ही करुणा है । मनुष्य में करुणा है तो वह मनुष्य है अन्यथा जंगली जानवर जैसा है । दूसरे के दु:ख को समझना ही बड़ी साधना है । परमातमा और मनुष्य के बीच यही अंतर है कि मनुष्य दूसरे के दु:ख को देखक यदोचित सहायता करने की कोशिष करता है, जो करता वही मनुष्य है । और परमात्मा जब दु:ख देखता है तो मनुष्य के दु:ख को पूर्णरुप से खत्म कर देता है । इसलिये वह दायलु है ।

प्रेमानंद स्वामीक हकते है प्रभु दूसरे के दु:ख को हर लेते है, वह उसके दु:ख को देख नही सकते जिसे जैसा दु:ख हो उसे वैसी वस्तु देकर निकारण करते है । इसलिये कहते है, अन्न के अभाव वाले को अन्न प्रदान करते है, वस्त्रहीन को वस्त्र देकर दु:ख का निवारण करते है, इलिये प्रेमानंद स्वामीने श्रीहरि को दयालु कहा है । शास्त्रो

में भी दाय के बहुत वर्णन है। गढपुर में एकबार भगवान श्रीहरिने आधी रात को एक भीखारण के अंतर्नाद को सुन उसे भोजन करवा कर दु:ख दूर किया था।

खोलडीयाद के हरिभक्त रुडा भगत को दुष्काल में सुखे खेत में बारीस गीरा कर पूरे बाजरे की फसल सुंदर करवा दी थी।

आंखे गाँव के निष्ठावन भक्त देवशी लोहार जिन्होने मंदिर निर्माण का कार्य गहने बेच सातसो रुपये दे कर पूर्ण करवाया। संतो को बुलाकर मूर्ति स्थापित करवाई। भोजन करवा कर सम्मान किया। उसके पश्चात देवशी लोहार के पास न तो गहने थे नही रुपये, पूर्णरुप से निर्धन हो गये। गाँव वाले एक पाव तेल भी नहीं देते। ऐसे भक्त में उनकी पुत्र का विवाह तय हुआ। सामने कन्या पक्ष से कहा गया पांचसो रुपये हो तब विवाह होगा। गाँव वाले तो मजाक उडाने लगे कि रुपये कहाँ से आयेंगे। देवशी ने श्रीहरि को याद किया। श्रीहरिने दर्शन दिये और कहा परेशान न हो हमे लेकर आयेंगे। आपने हमारे लिए बहुत किया है और महाराज अंतर्धान हो गये। इसके पश्चात बारात अमरेली गाँव गई। बारात का स्वागत हुआ और ठहराई गई। जब वरराजा मंडप जाने लगे तब पैसे मांगनेल गे कहो पैसे दोगे तभी ये शादी होगी। तभी श्रीजी महाराज बनिये का रुपलेकर महाराज वहाँ आये और बहुत से रुपये लेकर आये। रुपये की जाँच को सुनार आया औऱ बोला ऐसे रुपये तो मैने नहीं देखे। तब देवशी भगत कहे ये रुपये जुनागढ की पुरुषोत्तम शेठ की पीढी के है। महाराज ने भक्त को कहा आपको जीतने चाहिए इतने रुपये ले लेना बाद में नही मिलेगे। भक्त ने पांचसो रुपये लिए और महाराज अंतर्धात हो गये। सब देख आश्चर्यचकित हो गये। इस प्रकार महाराजने धन देकर दु:ख दूर किया। इसी प्रकार महाराजने झमराला के बनिए को १० के बदले दश हजार देकर उसकी दु:ख दूर किया।

प्रेमानंद स्वामी कहते है कि करुणानिधान श्रीहरि इस प्रकार अन्न, धन और वस्त्र देकर दु:ख दूर कर देते है। श्रीहरि जिस पर कृपा दृष्टि करते है उनका तो सबकुछ बदल जाता है। श्रीहरि की दृष्टि मात्र से उस जीव का कल्याण हो जाता है। परमात्मा की दया निस्वार्थ होती है। कुछ अपेक्षा नहीं रहती। कोई कीर्तिकामना नहीं होती। मनुष्य की दया में स्वार्थ होता है। गुणगान तो उसीका होता है। जो दया का सागर होता है। दया से सागर भगवान श्रीहरि के चरणो में प्रणाम कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते है और अपने गुरुजी प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री को प्रार्थ;ा करे कि ये मानवात और दयालुता हममें रहे जिससे भगवान की कृपा पा सके।

●

यदि स्वभाव सुधरे तो

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

जीवन मेंखुद का स्वभाव खूब महत्व रखता है। यदि अनपा कुस्वभाव का त्याग करे तो मनुष्य जन्म सार्तक हो जाता है। हम वर्षो से जप-तप-ध्यान-पूजा-दान करते है पारायण कथा - व्याख्यान सुनते है फिर भी मन शांत नही होता। क्योंकि स्वभाव सुदऱता नही है। क्रिया तो करते है किन्तु अंतर या दिल से नहीं सिर्फ दिखाना इसमें दोष किका है ? क्रिया का ..... नहीं अपना ही, हर क्रिया में जागृत रहे और ध्यान रहे तो अंतर शीतल हो जाता है। इसलिये स्वबाव परिवर्तन आवश्यक है। जिसका स्वभाव सुधर जाता है उसका जीवन भी सुधऱ जाता है।

स्वभाव का बल सबसे अधिक है। संसार को छोड सकते है किन्तु स्वभाव नहीं। उसी प्रकार हर गुण स्वभाव के पीछे छुप जाते है। कुत्ता राजा बने तबभी जूता चबाना

नही छोडता । मूली खाने के बाद कीतने भी मिष्ठान खाये किन्तु मूली का ढेकार मिष्ठान्न से ऊपर आ जाता है । स्वभाव भी ऐसा है स्वभाव परिवर्तन का अभ्यास दूसरे अभ्यास से कठिन है । जीव कुत्ते बिल्ली, चूहे, गधे आदि के जन्म ले चुका है । जिसका स्वभाव ऊपर आ जाता है ।

''बार गाउए बोली बदले तरुवर बदले शाखा,
बुढापामां केश बदले, पण लखण न बदले लाखा''

जैसे वांदर बुढा हो पर गुलांट मारना नहीं भूलता । उसी प्रकार बढती उमर में हम स्वभाव नहीं छोडते । स्वभाव परिवर्तन कठिन है । शरीर भगवा तुरंत पहनता है किन्तुमन क्रोधादि त्याग कर भगवा धारण करना कठिन है । महाराज के समय में रोलानंद, निर्विकल्पानंद, गोतीतानंद, हर्यानंद, चैतन्यानंद, पूर्णानंद अपनी विचित्र प्रकृति के कारण सत्संग में नही टीक पाये । कडवी नीमकौडी तब पक जाती है तब मीढी हो जाती है । प्राण के साथ ही प्रकृति जाती है । शिर का मुंडन सरल है किंतु स्वभाव का मुश्किल है ।

कईबार कुछ लोगो के नाम शीतलप्रसाद होता है और स्वभाव ज्वाला प्रसाद जैसा नाम और स्वभाव में जोजनो का अंतर होता है । दी संन्यासी गृहस्थ के वहाँ गया, एक सन्यासी स्नान करने गया तो दूसरा सन्यासी बोलने लगा ''स्नान करने गया वो तो गधे जैसा है ।'' दूसरा गया तब बोला ये तो बैल जैसा है । जब दोनो भोजन करने बैठे तब यजमानने एक को राडा दिया और दूसरे को घास खाने को दिया । अणु तोडना आसान है किंतु परिव्रतन मुश्किल ।

एक संत ने हरिभक्त को कहा अक्षरधाम में साथ में रहना है तो उसने कहा मैं अलग रहूंगा बोलो ऐसे को अक्षरधाम मिलेगा ?

एक स्थान पर योग्य प्रतिभाव न पा कर गायिका बोली मेरी यहाँ कदर नहीं मेरे गीत का सन्मान नहीं है । कोई तारीफ करे यह भी अपेक्षा वृति है । कई लोग दान तभी करते है जब उनका नाम लिया जाये, नाम के लिए ही पैसा देते है । जब काँच का बरतन फूटता है तो उसके कणी दूसरो का खून बहाती है । स्वभाव अपना और सत्संग दोनो का नुकसान करता है । स्वभाव का त्याग करे तो भगवान की प्राप्ति होती है । मनुष्य सामाजीक प्राणी है और स्वभाव युक्त प्राणी है । जीव का स्वभाव ही ऐसा है कि जहाँ सन्मान मिले वहीं जाता है । जहाँ टोकते है वहाँ नही जाता । टोकते है वो पसंद नहीं किन्तु टोके बगैर स्वभाव छोडी जाता है । स्वभाव की चाँच संतो से करवानी चाहिए । किये हुए कार्य और आधते वक्त के साधदृढ हो जाती है । स्वभाव यदि परिवर्तित नही होता वह जन्म मरण का कारण बनात है । स्वभाव सब कुछ है कई बार रास्तो में ट्राफिक जाम होता है वह गाडी नही स्वभाव की वजह से । स्वभाव की वजह से ही समस्या का सर्जन होता है ।

स्वभाव परिवर्तन भी कठिन है नामुमकिन नहीं है । जिस प्रकार कुएँ के किनारे पथ्थर लगे है वो होते तो बहुत कठोर है किंतु रस्सी धीसने से उस पर भी कटने के निशान पड जाते है । उसी प्रकार नित्य समागम, आत्मनिष्ठा से भजन एवं दृढ संकल्प से स्वभाव परिवर्तित हो जाता है । स्वभाव अच्छे अच्छे की अधोगति कर देता है । हर जगह तकलीफ स्वभाव की होती है । स्वभाव को त्याद कर भगवान का भजन करना चाहिए ।

●

सेवा से प्रसन्न महाराज

– जीज्ञासा जयंतिलाल राणफरा (मोरबी)

गढपुर मंदिर निर्माण हो रहा था महाराज भी वहीं थे । संत हरिभक्त पुरी तरह तन, मन, धन पूर्वक सेवा करते थे ।

श्रीजी महाराजने आज्ञा की ''घेला मे (नदी) जो भी

स्नान करने जाये वो एख पथ्थर उठाकर लाये'' स्वयं महाराज भी सुनहरे मुकट पत्थर उठा कर लाते थे । (क्यों ?)

''हम जैसो को सेवा का महिमा बहाने के लिए ?''

श्रीजी महाराजने एक दिन कहा ''मंदिर के नींव में जो एक सेर का भी पत्थर डालेगा उसकी एक पीढी का कल्याण हम करेंगे ।''

यह सुन मुहंमद नामका मुसलमान मुमुक्षु लडके ने सोचा ये तो मुक्त में मिलने वाली बात है तो मैं भी लाभ लेता हूँ । ''वह नोकरी से नकील धेला नदी से पथ्थर लेकर मित्र की दुकान गया वहाँ वजन किया इक्कीस शेर हुआ ।

वह पत्थर लेकर वह महाराज के दरबार मेंग या । महाराज उसके पास गये । महाराज के चरण में पडा और कहा जैसा कि आपने कहा था एक शेर पर एक पीढी का कल्याण करेंगे ये इक्कीस शेर का है, बताईये किजनी पीठी का कल्याण करेंगे ?''

भगवान उसके सामने देख कर मुस्कुराये और बोले ''जैसा की कहा है तुम्हारी इक्कीस सेर पर इक्कीस पीढी का कल्याण करेंगे'' मुहमंद प्रसन्न हुआ ।

प्यारे भक्तो ! उसकी सेवा से उसकी इक्कीस पीढी का कल्याण हुआ इसलिए भक्तो, तन, मन, धन से सेवा करनी चाहिए । सेवा से महाराज प्रसन्न होते है ।

નીચેના મહામંદિરોમાં નિત્ય દર્શન માટે

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
छपैया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.gopallalji.com
नारणघाट : www.narayanghat.com
वडनगर : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
प्रयाग : www.prayagmilan.org
अयोध्या : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १७-१५ ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदावाद में श्री नरनारायणदेव के चंदन के वस्त्रो के दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी की प्रेरणा से परम कृपालु श्री नरनारायणदेव को वैशाख शुक्ल पक्ष-३ अखात्रीज का चंदन के वस्त्रा से शुशोभित करके दर्शन करवाये गये। रोज नयी डिझाईवाले वस्त्र परिधान करवाकर दर्श; करवाये गये। अक्षर भुवन में भी इसी प्रकार दर्शन करवाये गये। पुजारी संतोने भगवान के अलौकिक दर्शन करवाये। सी असह्य गरमी में भगवान को शीतल चंदन से ठंडक रहे ऐसी व्यवस्था की गयी। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१५ तक ऐसै अलौकिक दर्शन होंगे।

(ब्र.स्वा. अनंतानंद, ब्र. स्वा. मुकुन्दानंद)

कला भगत के कुंडला गाँव में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, स.गु.शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से कला भगत के कुंडाल गाँव में रात्री सप्ताह पारायण स.गु. शा.स्वामी रामकृष्णदासजी, तथा स.गु. शा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्त पद पर हुई। जिसके यजमान प.भ. केशवलाल अंबालाल पटेल परिवार ह. गोविंदभाई तथा किरीटभाई थे।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। सभी हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये। अंतिम दिवस पर स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णधासजी तथा स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी आदि संत गण पधारे थे। अंतिम दिवस पर समूह महाप्रसाद का सुंदर आयोजन किया गाय। (डी.एन. पटेल कुंडाल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रामनगर (कलोल) ४२ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर रामनगर (ता. कलोल) श्री घनश्याम महाराज का ४२ वें पाटोत्सव प्रसंग के उपलक्ष में ता. २८-४-१२ से ता. २-५-१३ तक श्रीमद् भागवत अंतर्गत नवमी स्कंधकी पंच दिनात्मक रात्रीय पारायण स.गु.शा. स्वामी रामकृष्णदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर हुई। इस प्रसंग के यजमान प.भ. अंबालाल सांकलचंद पटेल परिवार ह. श्री घनश्यामभाई भरतभाई, श्री राकेशभाई तथा श्री राजुभाई। इस प्रसंग पर ता. २-५-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे।

संतो में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णधासजी, स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल), स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी पधारे थे। (शा. विश्वप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण म्युजिम में प्रेरणात्मक सेवा

श्री स्वामिनारायण म्युजिपवित्र पुष्प की सुवास व्यापक रुप से समाप के फैलने लगी है। जिस में कोई जाति भेद नहीं है।

प.पू. विश्ववंदनीय बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प का साक्षात् स्वरुप स्वामिनारायण म्युजियम सभी के कल्याण का बन गया है। वर्तमान में ही ईडर के मुस्लिम भाईओने स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (ईडर) की प्रेरणा से कस्बा मुस्लिम समाज बडी ईडर तथा मनसुरी धांची समाजने श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सुदंर आर्थिक धन राशी की सेवा की। श्रीजी महाराज के समय में करीम मीया जैसे कई भक्तगण हो गये है। वर्तमान में भी प.पू. बड़े महाराजश्री के अलौकिक प्रभाव से सत्संगी ना हो वैसे व्यक्ति भी श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सेवा प्रदान कर रहे है। (स्वामी सत्यसंकल्पदास, इडर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में मारुति यज्ञ का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में आदि आचार्य प.पू.श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज प्रस्तापित श्री कष्टभंजनदेव के सानिध्य में स.गु. महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से चैत्र शुक्ल पक्ष-१५ श्री हनुमान जयंती प्रसंग पर मारुती यज्ञ का आयोजन किया गया । पूर्णाहुति आरती वयोवृद्ध संत स.गु. स्वामी माधवप्रसाददासजी तथा स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी आदि संतोने की । प्रासंगिक सबा में शा.स्वामी यज्ञप्रकासदासजीने दादा का माहात्म्य समझाय । (पा. नरोत्तम भगत)

श्रीहरि महिला मंडल कांकरिया

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की शुभ आज्ञा से कांकरिया में श्रीहरि महिला मंडल की बहने हर श्रीहरि जयंती तथा प्रत्येक एकादशी को सत्संग सभा का सुंदर आयोजन किया गया ।

जेतलपुर के सां. बचीबा के शिष्य सां. नर्मदाबा आदि बहनो की सत्संग सभा में कथा वार्ता का लाभ प्रदान करती है । चैत्र शुक्ल पक्ष-९ श्रीहरि प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया । बहनो ने रात में प्राकट्योत्सव आरती के दर्श; किये ।

(श्रीहरि महिला मंडल, कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्तिपार्क (नये नरोडा) १५ वाँ प्राकट्योत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु. शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा हरिभक्तों के साथ सहकार से मंदिर का १५ वाँ पाटोत्सव विधिपूर्वक मनाया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में रात में श्री धीरजाख्यान पंचान्ह पारायण ता. २४-४-१३ से २८-४-१३ तक स.गु.शा. स्वामी रामकृष्णदासजी तथा स.गु.शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई । इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू. बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी बहनो को दर्शन आशीर्वाद प्रदान किये थे । उसी प्रकार बड़े महाराजश्री पधारे थे और यजमान परिवार पर प्रसन्न हुए थे ।

ता. २८-४-१३ को समूह महापूजा की पूर्णाहुति तथा अन्नकूट आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से हुई । स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने प्रासंगिक उद्बोधन करके कथा की पूर्णाहुति करवायी । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, नारायणघाट तथा एप्रोच मंदिर के संतगण पधारे थे । प.भ. अश्विनभाई तथा अन्य हरिभक्तोंने यजमान पद का लाभ लिया । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायणमंदिर विहार में मारुति यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वाद आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी गुरुप्रसादासजी तथा स.गु. महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी (कांकरिया) तथा स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार ''ठाकुरजी के सानिध्य में चैत्र शुक्ल पक्ष-१५ को श्री हनुमान जयंती को मारुति यज्ञ का सुंदर आयोजन किया गया । यजमान पद पर गाँव के प.भ. रमणभाई सोमाभाई बेचरदास पटेल परिवार थे ।

यज्ञ की पूर्णाहुति पर कांकरिया, अहमदाबाद, जेतलपुर, धलोका, सापावाडा, माणसा, नारायणपुरा, सायला, सोकली आदि स्थानो से संतगण पधारे थे ।

(रमणभाई पटेल, विहार)

प्रसादीभूत विहरागँवा में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि.स.गु. चितारा स्वामी बलदेलप्रसाददासजी कि दिव्य प्रेरणा से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णधासजी (कालुपुर मंदिर) तथा स.गु. स्वामी देवप्रकासदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासधासजी (नारायणघाट महंतश्री) के आशीर्वाद से तथा प.भ. साकंलचंद छगनदास पटेल तथा अ.सौ. जड़ीबहन सांकलचंद पटेल के शुभ

संकल्प से उनके जीवन पर्व तथा विहार गाँव में ता. ६-५-१३ से ता. १२-५-१३ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के सुमधुर संगीत के धूमधाम से संपन्न हुई । इस प्रसं गपर ता. ६-५-१३ को प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री ता. ९-५-१३ को बड़े महाराजश्री ता. ९-५-१३ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, ता. ११-५-१३ को प.पू. बडी गादीवालाश्री उसी दिन प.पू. लालजी हमारजश्री पधारे थे ।

पूर्णाहुति प्रसंग पर ता. १२-५-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । कथाकी पूर्णाहुति के बाद समग्र हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये । यजमानश्री सांकलचंदभाई, सुपुत्र जयंतीभाई श्री दशरथभाई, श्री प्रकाशभाई, चि. भरतभाई, पार्थ, दिव्य, हर्ष, तथा माहिर ने धर्मकुल पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किये । इस प्रसंग की प्रेरणा मार्गदर्शन स.गु. स्वा. श्यामचरणदासजी (मूली महंतश्री) तथा स.गु. भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजीने किया था ।

इस प्रसंग पर सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)ने किया था ।

(शा. स्वा. नारायणमुनि स्वामी)

शाीबाग में श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से अ.नि. अंबालाल शिवरामदास के मोक्ष हेतु तथा गं.स्वा. रईबहन अंबालाल पटेल तथा अ.सौ. भीखीबहन कांतिलाल पटेल के शुभ संकल्प से शाहीबाग मे ता. ११-५-१३ से ता. १७-५-१३ तक श्रीमद् भागवत कथा प.पू. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुळ) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । जिस के आयोजन श्री कांतिलाल अंबालाल पटेल, श्री नरेन्द्र कांतिलाल पटेल तथा दिव्येश कांतिलाल पटेल थे । कथा में आनेवाले प्रसंगो को धूमधाम से मनाया गया ता. १७-५-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति के बाद यजमान परिवार को बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किये ।

(शा. दिव्यप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पानसर का ७ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा सगु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) के मार्गदर्शनक से श्री स्वामिनारायण मंदिर पानसर (ता. कलोल) का ७वाँ पाटोत्सव ता. २१-४-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ हाथों से मनाया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. १९-४-१३ से ता. २१-४-१३ तक त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकी कथा स.गु.शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी (वडनगर) ने की ।

ता. २१-४-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्रीने पधारकर ठाकुरजी का अन्नकूट की आरती की । तथा कथा की पूर्णाहुति की आरती करके सभा में मुख्य यजमानश्री किरणभाई जे. पटेल (वडु), कोठारी गोविंदभाई गज्जर, श्री जीज्ञेशभाई गज्जर, श्री शैलेषभाई नायक, श्री घनश्यामभाई ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजनकरके आरती का अंत में समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । सभा चालन सगु.शा.स्वा. विश्वप्रकाशदाजी (वडनगर मंदिर) के कोठारी ने किया ।

(शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी, वडनगर)

शायोना सीटी विस्तार घाटलोडीया वार्षिकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण सत्संग मंडल (शायोना सीटी विस्तार) घाटलोडीया का प्रथम पाटोत्सव सगु. महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकासदासजी (नारायणपुरा महंतश्री) के वरद् हाथों से मनाया गया । प.भ. मुकेशभाई के यजमान पद पर श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक हुआ ।

महापूजा में मुख्य यजमानश्री नरेन्द्रभाई आत्माराम पटेलतथा दूसरे हरिभक्तोने लाभ लिया। पांचमी सत्संग सभा में पू. महंत स्वामी हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा) शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी तथा कोटेश्र गुरुकुल के संत गणोने पदारकर कथा वार्ता का लाभ दिया।

संचालकश्री रमेशभाई श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल का महिमा कहा।

(रमेशभाई पटेल : ९५८६४२२६०१)

बोपल विस्तार के श्री नरनारायणदेव के आश्रित हरिभक्त बहनो का अनुभव

सर्वोपरि भगवान श्रीरि के सच्चे निष्ठावान उपासक तथा धर्मकुल आश्रित हरिभक्तों को कईबार महाराज की लीला के अनुभव हुइ है। प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञ-आीर्वाद से स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स्कीम कमीटी तथा संत प्रथम मंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव आदि देवो के सुवर्ण सिंहासन का काम करवा रहे है। इस कार्य में भगवान स्वयं साथ दिया है। बोपल में स्थित श्री नरनारायणदेव के आश्रित प.भ. दिलीपबाई अंबालाल पटेल की धर्मपत्नी दिपीकाबहन को कृपालु श्री नरनारायणदेव स्वप्न में दर्शन दिये। और कहा कि आपने पहनी हुई सोने की अंगुठी हमारे सुवर्ण सिंहासनमें भेट स्वरुप प्रदान कर दीजिए। इस बात का ज्ञान बोपल मंदिर के महंत स्वामी शा. धर्मवल्लभदासजीको करवाने पर उन्होंने सुवर्ण की अंगुठी तुरंत ही श्री नरनारायणदेव के कोठार में भेट स्वरुप प्रदान करने को कहा और उन्होंने एसा ही किया। प.भ. अमृतभाई कोठारी तथा हरिभक्तगण भी उत्साहीत है।

(प्रविणभाई उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर देवपुरा शताब्दी महोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशईर्वाद से देवपुरा गाँव मंदिर निर्माता स.गु. पू. निरंजनदासजी स्वामी, पू. स.गु.शा.स्वा. हरिस्वरुपदासजीकी दिव्य प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर देवपुरा का शताब्दी महोत्सव ता. २९-४-१३ से ता. १-५-१३ तक श्री मद् सत्संगिजीवन पारायण (प्र. २) स.गु.शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर) तथा स.गु.स्वा. रघुवीरचरणदासजी के मार्गदर्शन से सगु.सा.स्वा. हरिजीवनदासजी (महंतश्री हिंमतनगर) तथा सगु.शा.स्वा. घनश्यामप्रकासाजरसी (महंतश्री माणसा) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। १०० साल पहले प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री वासुदेवप्रसादजी महारजश्री के वरद् हाथों से मंदिर की प्रतिष्ठा हुई थी। भगवान के स्वरुपो को नया स्वरुप देकर के रंग आदि के साथ मारबल का सिंहासन बनवाया गया। बहनों के मंदिर में भी श्रीरंगमहोल श्री घनश्याम महाराज के स्वरुप की नयी मूर्ति की प्रतिष्ठा की आरती ता. १-५-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भी गयी। इस प्संग पर प.पू. बड़े महाराजश्री को ७० फिट का सुंदर मगोरे का हार प.भ. लवजीभाई भीमदास पटेल परिवार ने पहनाया था। श्री नरनारायणदेव पीठ के संतगण आशीर्वदा देने पधारे थे। गाँव के १२५ वर्ष तथा मंदिर के १०० वर्ष पर्व गंगा कुएँ (प्रसादी की) के १०० वर्ष पूर्ण हुई है। इस निमित पर उत्सव का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर गाँव के हरिभक्तों में श्री वासुदेवभाई, मोहनभाई, झवेरभाई, लालजीफाई, के वल्लभभाई, चतुरभाई, रणछोडभाई, धरमशीभाई, चंद्रकान्तभाई, दयालजीभाई, रमणभाई, बटुकभाई, शरदभाई, कांतिभाई, रसिकभाई, नागरभाई, लालजीभाई, रमणभाई आदि हरिभक्तोने श्रद्धा भक्ति से सेवा प्रदान की। बहनो ने भी प.पू.अ.सौ. गादीवालश्री को भेट-पूजन किया।

(रणछोडभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडीया का दूसरा प्रतिष्ठा विधिमहोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा.आत्मप्रकाशदासजी

तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से गाँव राबडीया में बिराजमान भगवान स्वामिनारायण आदि देवों का दूसरा पाटोत्सव ता. १९-५-१३ रविवार को धूमधाम से मनाया गया । षोडशोपचार से ठाकरुजी की महापूजा, अभिषेक संतो तथा यजमान द्वारा किया गाय । उसके बाद सभा में जेतलपुर से तथा तपोमूर्ति सगु. श्यामचरणदासजी, शा. भक्तिनंदन स्वामी, छपैया से ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानदंजी, कलोल से स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, मकनसर से आनंदजीवनदासजी ने कथावार्ता की। (डॉ. भगत साहब, राबडीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडा का ११ वाँ वार्षिक प्रतिष्ठा विधिमहोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि.स.गु. कृष्मकेशव स्वामी की पूर्वाश्रम की जन्मभूमि में पुनः मंदिर निर्माता जेतलपुर के महंत स्वामी शा.आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से गाँव चराडा में विराजमान भगवान स्वामिनारायण आदि देवों का ग्यारवाँह पाटोत्सव ता. ७-५-१३ रविवार को धूमधाम से मनाया गया । प्रथम षोडशोपचार से ठाकुरजी की महापूजा, अभिषेक, संतो तथा यजमानो द्वारा किया गया । सत्संग सभा में जेतलपुर से स.गु. भक्तिवल्लभदासजी, महंत स.गु. के.पी स्वामी, शा. भक्तिनंदन स्वामी छपैया से ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजीने पधराकर कथावार्ता का पाटोत्सव के यजमान पद का लाभ प.भ. रमेशभाई अंबालालभाई पटेल (दूधवाले) लाभ लिये थे । समग्र आयोजन प.भ. संजयभाई पटेल तथा श्री न.ना.देव युवक मंडलने किया था ।

(भक्तिनंदन स्वामी, जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डुमाळा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा.आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्रीजी महाराज के चरणों से अंकित डुमाणा गाँव में भाईयों तथा बहनो के मंदिर में पुनः प्राण प्रिष्ठा महोत्सव ता. ९-५-१३ से ता. ११-५-१३ क धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसं गपर त्रिदिनात्मक रात्रि सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में पू.पी.पी. स्वामी, भक्तिनंदनदासजी, हरिप्रकाशदासजी, ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी ने कथा करके हरिभक्तों को तृप्त किया था । इस प्रसंग पर विष्णयुाग का भी आयोजन किया गाय था । ता. १०-५-१३ को सायंकाल ठाकुरजी की भव्य सोभायात्रा निकाली गयी थी । जि समें गाँव के सभी हरिभक्त उत्हापूर्वक भाग लिये थे । ता. ११-५-१३ को प.पू. आचार्य महाराजश्री भी प्रथमवार डुमाणा गाँव में पधारे थे । उस समय भव्य शोभायत्रा निकाली गयी ती । प.पू. महारजाश्री प्रथम भाईयों के मंदिर में प्रतिष्ठा करने पधारे थे । बाद में बहनो के मंदिर में प्रतिष्ठा करके आरती उतारकर यज्ञनारायण की पूर्णाहुति किये थे । प्रसादी की धर्शन करके सभा में पधारे थे । जहाँ पर महाराज का पूजन अर्चन किया गया था । संतो के पूजन के बाद हरिभक्तों को संमानित किया गया था । संतो में जेतलपुर से स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, कांकरिया से गुरुप्रसादासजी, कालुपुर से जगतप्रकाशजासी स्वामी, जे.के. स्वामी, इत्यादी संत प्रवचन करके हरिभक्तों को संतुष्ट किये थे । अंत में प.पू. महाराजश्री सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । पाटणी, विरमगाँव, गोरैया, कालीयाणा, इत्यादि स्थानों से सां.यो. बहने पधारी थी । मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर भीखाभाई, नवीनभाई, बलदेवभाई, हेमाभाई, इत्यादि भक्तों की सेवा सराहनीय थी । सभी लोग महापर्साद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे ।

(भक्तिनंदन स्वामी, जेतलपुरधाम)

मोटप गाँव में भव्यता से शतवार्षिक महोत्सव मनाया गया

सर्वावतारी स्वामिनारायण भगवान के चरण कमल से अंकित भूमि तथा स.गु. गोपालानंद स्वामीने तुलसी भवन को दिये लालजी ठाकुरजी को जब १५० वर्ष तथा मंदिर को

१०० वर्ष पूर्ण होने पर प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. १२-५-१३ से १६-५-१३ तक भव्य शतवार्षिक महोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर १०० धंटे की महामंत्र की धून का आयोजन ता. २९-४-१३ से किया गया । जिसका आरंभ शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजीने करवाया। पूर्णाहुति ता. ३-५-१३ को विजयध्वजा रोपण करके किया गया। पंचदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिभूषण शास्त्र की कथा का आयोजन किया गया । वक्ता पद पर स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी बिराजमान थे। साथ ही १४ संहितापाठ, विविधशास्त्र का वांचन विद्वान संतो भूदेवोने किया । महोत्सव के समय रंगोत्सव, खीचडी उत्सव, जन्मोत्सव, रासोत्सव, पुष्पदोलोत्सव, महा आरती आदि कार्यक्रम धूमधाम से मनाये गये । जलयात्रा का आयोजन ता. १५-५-१३ को किया गया। त्रिदिनात्मक महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया। जिस मे १५० यजमानश्रीने लाभ लिया। कालुपुर, सापावाडा, जमीयतपुरा, मूली, सायला, छपैया आदि स्थानो से संत पधारे थे। ता. १४-५-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारे थे। प.पू. बड़ी महाराजश्री के वरद् हाथो से ''श्रीहरि ने व्हालुं मोटप'' ए पुस्तक का विमोचन किया गया। समग्र महोत्सव के यजमानश्रीने बड़े महाराजश्री का स्वागत कर आशीर्वाद प्राप्त किये। ता. १६-५ को नव्य भव्य शोभायात्रा द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का स्वागत किया गया।

१०० ध्वजा, १०० बाईक से युवानोने तथा भक्तोंने स्वागत किया । उसके बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी का अभिषेक किया। उसके बाद यज्ञनारायणकी पूर्णाहुति प.पू. आचार्य महाराजश्रीने श्रीफल के साथ आरती करके की। सभा में कथा की पूर्णाहुति पू. महाराजश्री तथा मुख्य यजमानश्री द्वारा की गयी। इस प्रसंग पर ''सर्वमंगल नामावलिकी ३ केसेट'' का विमोचन प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो द्वारा किया गया । जेतलपुर से स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, स.गु.शा. स्वा. गुरुप्रसाददासजी कांकरिया, स.गु. ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी छपैया, स.गु.शा.स्वामी नारायणप्रसाददासजी (सायला), स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजीने प्रवचन किया । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया। समग्र महोत्सव में मार्गदर्शन मेहसाणा तथा जेतलपुर से स.गु. मंहत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजीने किया । पांच दिन तक जेदलपुर से स.गु. श्यामचरण स्वामी, शा. उत्तमप्रिय स्वामी, छपैया से ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी, स.गु. घनश्याम स्वामी, डी.के. स्वामी, हरिप्रकाश स्वामी आदि संतने खूब मेहनत की। साथ साथ श्री न.ना.देव स्कीम कमिटी मेम्बर तथा समग्र भक्तों की तरफ से प.भ. श्री जी.के. पटेल साहब तथा शा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर)ने संचालन किया । (शा. भक्तिनंदन स्वामी, कोठारीश्री मोटप, हितेन्द्रभाई)

खेरवा मे सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से खेरवा गांव में वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १२-५-१३ को रात्रि मे सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में जेतलपुर से शा. भक्तिनंदन स्वामी, ब्र. हरिस्वरुपानंदजी छपैया तथा जेतलपुर के महंत स्वामी के.पी. स्वामीने कथा करके भक्तों को संतुष्ट किया था । समग्र आयोजन महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजीने किया था।

(महंत स्वामी के.पी. स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अ.नि. हरिगोविंद स्वामी तथा माधवप्रसाददासजी तथा गुरुप्रसाददासजी एवं आनंद स्वामी की प्रेरणा से तथा उनावा

मंदिर के महंत स्वामी हरिप्रकाशदासजी के सहयोग से उनावा मंदिर का ३९ वाँ पाटोत्सव प्रसंग पर ''दंढाव्य देश लीला'' का कथा पारायण स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सभा में यजमान परिवार द्वारा पूजन-आरती के बाद पू. महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिया था ।

पाटोत्सव के यजमान अ.नि. भगुभाई आदरभाई पटेल परिवार थे । वैशाख शुक्ल-३ को ठाकरुजी का अभिषेक अन्नकूट आदि कार्यक्रम विधिपूर्वक किया गया था। पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर स्वा. निर्गुणदासजी, स्वा. नारायणप्रसाददासजी तथा अन्य धाम से संत पधारे थे । सभा संचालन विश्वस्वरुपदासीजने किया था । बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । यजमान परिवार के पद्मकांत, योगेन्द्रभाई ने संतो का पूजन किया था । कोठारी शामलभाई तथा अन्योने सेवा का लाभ लिया था । (को. श्री न.ना.देव युवक मंडल)

भाभर बनासकांठा गाँव में श्री नरनारायणदेव के मंदिर का भूमिपूजन

बनासकांठा में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान पधारे नहीं थे । जिसके परिणाम स्वरुप यहाँ के भक्तों में श्रीहरि के प्रति अटूट श्रद्धा है । यहाँ पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से तथा कानाबार परिवार की कुल देवी बालवी माताजी के आशीर्वाद से प.भ. नटुभाई कानाबार के मार्गदर्शन से अमदावाद भुज के मध्य में आये हुए भाभर गाँव में श्री नरनारायणदेव के शिखरी मंदिर का भूमि पूजन वैशाख शुक्ल-३ ता. १३-५-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों धूमधाम से संपन्न किया गया था । इस प्रसंग पर महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा वडनगर के नारायणवल्लभदासजी तथा कानाबार परिवार एवं अनेक धामों से पधारे हुए संत एवं हरिभक्त उपस्थित थे । इस गाँव के मंदिर की विशेषता यह है कि किसी से बिना मांगे मंदिर का निर्माण करना है । श्री नटुभाई कानाबार के माध्यम से संपूर्ण कार्य होगा । इस प्रसंग पर अनेक कार्यक्रम किये गये थे । इस प्रसंग के यजमान श्री विनोदभाई, नरभेरामभाई, मोतीरामभाई कानाबार परिवार थे । स्वा. नारायणमुनिदासजी ने सुंदर आयोजन किया था । (रमेशभाई)

दियोदर में वैशाख शुक्ल-२ ता. १२-५-१३ को श्री स्वामिनारायण मंदिर का भूमिपूजन प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों किया गया था ।

सम्पूर्ण आयोजन महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से स्वा. नारायणमुनिदासजीने किया था । गाँव के हरिभक्तों के सहयोग से कार्य सम्पन्न हुआ था ।(रमेशभाई कानाबार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा १४३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा घनश्याम स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का १४३ वाँ पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-६ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ था । पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत का त्रिदिवसीय कथा का आयोजन किया गया था । जिसके यजमान महिला मंडल के शणगारवा कंचनबा, तथा समस्त सत्संगी बहने थी । पाटोत्सव के यजमान चावडा विक्रमभाई थे । प.भ. नारायणभाई शेठ भी उत्सव में सहभागी बने थे । प.पू. बड़े महाराजश्रीने यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी । (को. चन्द्रप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल में ८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल का ८ वाँ पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-७ ता. १७-५-१३ को मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुये थे । प्रासंगिक सभा में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक

आशीर्वाद दिया था। अमदावाद मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा ब्र. राजेश्वरानंदजी साथ पधारे थे। पाटोत्सव के यजमान अ.नि. चतुरदास झवेरदास सोनी के पुत्र सुरेशभाई सोनी परिवार थे। बोपल मंदिर में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। ता. २८-४-१३ को सत्संग सभा में हरिनंदन स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ''सत्संग के युवानो के ऊपर असर'' इस नाटक खेला गया था। राम नवमी के दिन लाभु बहन अमृतभाई पटेल तथा महिला मंडल ने सुपेडी की एकांतिक भक्त जानबाई के जीवन पर आदर्श पर नाटक खेली थी।

को. अमृतभाई पटेल, अरविंदभाई सेंधाभाई पटेल इत्यादि हरिभक्तों के सहयोग से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है। (प्रवीणभाई उपाध्याय)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

जामसर (हालार) श्री हनुमान जयंती

जामसर गाँव में आज से १८५ वर्ष पूर्व गाँव की रक्षा के लिये स.गु. निर्दोषानंद स्वामीने हनुमानजी को प्रतिष्ठित किया। जिसकी सम्पूर्ण कृपादृष्टि हालार देश के ऊपर बरस रही है।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हनुमानजी की प्रतिष्ठा को १८५ वर्ष पूर्ण हो गये। जिससे ता. २३-४-१३ से ता. २५-४-१३ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर जामसर द्वारा सुंदर कथा महोत्सव मनाया गया था। कथा पारायण के दिन पोथीयात्रा के समय प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। सभी बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दि थी ता. २४-४-१३ को स.गु. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा महंत देवप्रकाशदासजी स्वामी पधारे थे। ता. २५-४-१३ को प.पू. लालजी महाराजश्री कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर पधारे थे। सभी सभाजन को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग पर मूली से महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी, शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी तता स्वा. बालस्वरुपदासजी संत मंडल के साथ पधारे थे। स.गु. शा.पी.पी. स्वामी मार्गदर्शक थे। कथा के वक्तापद स.गु. रामकृष्णदासजी थे। गाँव के तथा बाहर गाँव के हरिभक्त कथा श्रवण करके धन्य हो गये। (शा. दिव्यप्रकाशदास)

नीलकंठनगर (हलवद) प्रथम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नीलकंठनगर गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर का प्रथम पाटोत्सव ता. २७-४-१३ को धूमधाम के साथ मनाया गया था। स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजीने ठाकुरजी का तथा धर्मकुल की महिमा का दृष्टांत के साथ वर्णन किया था। सभा संचालन शा. भक्तिनंदनदासजीने किया था।

(अनिलभाई दूधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (ओस्ट्रेलीया) ८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से सीडनी के श्री स्वामिनारायण मंदिर का ८ वाँ पाटोत्सव ३० मार्च से १ अप्रैल तक मनाया गया था। इस प्रसंग पर अमदावाद से छोटी पी.पी. स्वामी तथा शा.स्वा. रामकृष्णदासजी पधारे थे। जिस के वक्तापद पर श्रीहरि वनविचरण की कथा तथा श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक अन्नकूट दर्शन इत्यादि कार्यक्रम हुए थे।

संतो के साथ पधारे हुए पूरव पटेल तथा उनेक साथी नंद संतो द्वारा रचित कीर्तनो को गाकर रात्री के प्रसंग को उत्तम बना दिया था।

प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर के बगल की जमीन खरीद ली गयी है। जिस के लिये ता. २०-४-१३ को सायंकाल श्रीहरिकृष्ण महाराजकी शोभायात्रा निकाली गयी थी। मुख्य द्वार का उद्घाटन भी किया गया था। उद्घाटन के समय रजनीकांत कनुभाई पटेल तथा श्री हर्ष शुक्ल ने यजमान पद का लाभ लिया था। ता. २८-४-१३ को श्री हनुमानजी के जयंती अवसर पर १०८ हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था। आज के दिन प.पू. बड़े

महाराजश्री के ६९ वें जन्म जयंती के अवसर पर छोटे बड़े सभी मिलकर केक काटकर प्रागट्योत्सव को धामधूम से साथ मनाया था ।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सीडनी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी तथा हनुमान जयंती तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का ६९ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

सर्वोपरि श्रीहरि के २३२ वा प्रागट्योत्सव तथा रामनवमी के अवसर पर समूह महापूजा में २३२ से अधिक हरिभक्तों ने लाभ लिया था । महापूजा में पुजारी शांतिप्रकाशदासजी भी बैठे थे । महापूजा विधिशास्त्री व्रजवल्लभदासजीने करायी थी । हनुमान जयंती के अवसर पर पूजा-आरती इत्यादि कार्यक्रम किया गया था।

प.पू. बड़े महाराजश्री के ६९ वें प्रागट्योत्सव पर हरि भक्तों ने खूब उल्लास के साथ केक काटकर मनाया था। यहाँ के सत्संग को धर्मकुल का आशीर्वाद मिलता रहता है।

(वसंत त्रिवेदी, शिकागो)

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में राजोपचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. ज्ञानप्रकाशदासजी एवं. स्वा. नरनारायणदासजी की उपस्थिति में सुंदर महापूजा का आयोजन किया गया था । श्रीहरि के प्रागट्योत्सव पर चैत्र शुक्ल-९ को पूजा के निमित बहनो द्वारा जयलात्रा की शोभायात्रा निकाली गयी थई । भगवान के समक्ष कीर्तन भजन का भी आयोजन किया गया था। भगवान के ऊपर केसरजल का छिटकाव किया गया था । डी.के. स्वामी ने वेद मंत्र का पाठ करके पुष्पांजलि अर्पण करवायी थी। दोपहर १२ बजे जन्मोत्सव की आरती धूमधाम से की गयी थी। हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे। (शा.स्वा. ज्ञानप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी में श्रीहरि प्रागट्योत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वा. नरनारायणदासजी एवं स्वा. धर्मकिशोरदासजी की उपस्थिति में चैत्र शुक्ल-९ को श्रीहरि प्रागट्योत्सव के निमित्त कथा-कीर्तन, धुन, भजन इत्यादि का आयोजन किया गया था । प्रागट्योत्सव का दर्शन करके हरिभक्त धन्य हो गये थे।

(शा.स्वा. धर्मकिशोरदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युजर्सी विहोकन में रामनवमी श्रीहरि प्रागट्योत्सव तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का प्रागट्योत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से विहोकनमंदिर में चैत्र शुक्ल-९ को सर्वोपरि श्रीहरि का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था। प्रासंगिक सभा में महंत स्वा. सिद्धेश्वरदासजी, महंत स्वामी घनश्यामदासजी, महंत स्वामी नरनारायणदासजी तथा महंत शा. धर्मकिशोरदासजी की उपस्थिति में सभा का आयोजन किया गया था। जिस में भजन धुन-कीर्तन इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे। संतो ने सर्वोपरि श्रीहरि की लीला का गुणगान किया था । प्रागट्योत्सव की आरती का दर्शन करके सभी धन्य हो गये थे। (प्रवीणभाई शाह)

प.पू. बड़े महाराजश्री का ६९ वाँ प्रगाट्योत्सव

प.पू. बड़े महाराजश्री का ६९ वाँ प्रागट्योत्सव यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में रविवार को सायंकाल पू. बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार तथा महंत स्वामी घनश्यामदासजी तथा महंत ज्ञानप्रकाशदासजी की उपस्थिति में सभी हरिभक्तों ने भजन-भक्ति, धुन-कीर्तन इत्यादि कार्यक्रम किया था । घनश्याम स्वामी तथा ज्ञान स्वामीने धर्मकुल की महिमा का गुणगान तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के जीवन कवन पर सुंदर कथा प्रवचन किया था।

सभा में सर्वप्रथम पू. बिन्दुराजा तथा श्री सुव्रतकुमार एवं श्री सौम्यकुमारने प.पू. बड़े महाराजश्री की तसवीर का पूजन करके पुष्पहार अर्पण किया था। अन्त में केक काटकर धर्मवंशी की जय जयकार के बाद भोजनप्रसाद लेकर सभी प्रस्थान किये थे। (शा. ज्ञानप्रकाशदासजी)

समस्त सत्संग को जानकारी हेतु

समस्त सत्संग को सूचित किया जाता है कि श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर - अमदावाद (हवेली) में रहनेवाली सां.यो. शिल्पाबा तथा शीतल बा ये देनो बहने संप्रदाय की प्रणालिका का उल्लंधन करके स्यं चली गयी है, इसलिये श्री नरनारायणदेव देश के शिखरी मंदिर तथा हरिमंदिर में आश्रय नहीं देना है। इस बात की सभी को जानकारी होनी चाहिये।

- आज्ञा से

समस्त सत्संग को जानकारी हेतु

समस्त सत्संग को सूचित किया जाता है कि एस.एस. स्वामी के रुप में प्रसिद्ध स्वामी सत्यस्वरुपदासजी गुरु स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी संप्रदाय के नियम तथा सिद्धांत के विरुद्ध आचरण करते थे और अपने मन के अनुसार प्रवृत्ति करते थे इसलिये त्यागी के अनुरुप वर्तन न करने के कारण उन्हें विमुख कर दिया गया है। जिससे उन्हें श्री नरनारायणदेव देश के शिखरी मंदिर या हरिमंदिर में आश्रय न दिया जाय। इस वात की सभी को जानकारी होनी चाहिये।

- आज्ञा से

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमदावाद : श्री स्वामिनारायण मासिक अंग्रेजी अंक का ट्रांसलेशन करने वाले श्री आशिषभाई रावल के पिताजी श्री रमेशचंद्र रावल ता. १२-५-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

माणेकपुर : प.भ. अंबालालभाई पटेल ता. १-५-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

सुरवदर : प.भ. मूली श्री राधाकृष्णदेव तथा श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान श्री ठाकरसीभाई गडेशीया ता. २९-४-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

नांदोल : प.भ. पटेल कालीदासभाई डाह्याभाई ता. २६-४-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

कलोल : प.भ. पटेल घनश्यामभाई की माताजी पटेल चंचलबहन (उम्र ९५ वर्ष) ता. २५-५-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

देलवाडा : प.भ. साकलचंद कालीदास के पुत्र श्री धर्मांगभाई ता. १-५-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

सापावाडा : प.भ. डॉ. हरिकृष्णभाई गोकुलभाई पटेल की माताजी जमनाबहन गोकुलभाई पटेल ता. २२-५-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

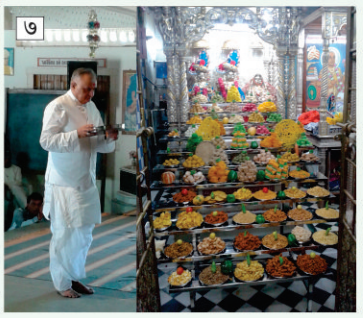

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर डुमाणा मूर्ति प्रतिष्ठा करते और यज्ञनारायण की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री (२) उनावा मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष में प.पू. आचार्य महाराजश्री की निश्रा में कथा पारायण करते हुए वकता महोदय (३) देवपुरा मंदिर में शताब्दी वर्ष पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री (४) रामनगर (कलोल) मंदिर के ४२ वाँ पाटोत्सव के उपलक्ष में प.पू. बड़े महाराजश्री की निश्रा में कथा पारायण करते हुए वकता महोदय (५) शिकागो मंदिर में महापूजा में लाभ लेते हुए हरिभक्त (६) सिडनी मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर कथा वार्ता में लाभ लेते हुए हरिभक्त (७) माणसा मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री (८) चराडा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुए संतगण (९) कांकरिया मंदिर में एकादशी सभा में धून कीर्तन करते हुए बहने (१०) अपने आई.एस.एस.ओ. केलगरी (केनेडा) चेप्टर में सत्संग सभा में धून कीर्तन करते हुए हरिभक्त ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 “Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराज पार्क (अहमदाबाद) में उजवायेल रजत जयंती महोत्सव की दिव्य जलक ।

Jagadish Offset

Praful Kharsani